पाठ - राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद (तुलसीदास)

कार्यपत्रिका - 01

समय: 40 मिनट **पूर्णांक:** 25

Section A: वस्तुनिष्ठ प्रश्न (MCQs & Assertion-Reason)

प्रश्न १. परशुराम के घोर क्रोध के सम्मुख श्रीराम का स्वयं को उनका 'एक दास' कहना उनके किस जीवन-मूल्य को प्रतिपादित करता है?

(क) अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना।

(ख) घोर संकट के समय भी अपनी सर्वोच्च विनम्रता और मर्यादा बनाए रखना।

(ग) लक्ष्मण को युद्ध के लिए उकसाना।

(घ) राजा जनक की लाचारी का उपहास उड़ाना।

प्रश्न २. "जैसे सोने मिलत सुहागा" और "पद सरोज मेले दोउ भाई" में क्रमशः कौन-से अलंकार प्रयुक्त हुए हैं?

(क) अतिशयोक्ति और अनुप्रास अलंकार (ख) उपमा और रूपक अलंकार

(ग) अनुप्रास और उपमा अलंकार (घ) रूपक और अतिशयोक्ति अलंकार

प्रश्न ३. कथन-कारण प्रश्न (Assertion-Reason):

- **कथन (A):** परशुराम के कोप को देखकर स्वयंवर सभा में उपस्थित सभी राजा अपने पिताओं के नाम के साथ अपना नाम पुकारकर दंडवत् प्रणाम कर रहे थे।
- **कारण (R):** वे परशुराम के प्रति अगाध भक्ति और श्रद्धा व्यक्त करना चाहते थे।

(क) कथन A सही है, परंतु कारण R गलत है।

(ख) कथन A गलत है, परंतु कारण R सही है।

(ग) कथन A सही व्याख्या करता है।

(घ) कथन A और कारण R दोनों सही हैं।

प्रश्न ४. काव्यांश के प्रमुख प्रसंगों का उनके सही भावों के साथ मिलान (Match the Following) कीजिए:

स्तंभ 'क' (काव्य प्रसंग)
(1) कुटिल भूप हरषे मन माहीं
(2) बिधि अब सँवरी बात बिगारी
(3) उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू
(4) हृदयं न हरषु बिषादु कछु

स्तंभ 'ख' (सही मानसिक भाव)
(अ) अत्यंत उग्र रौद्र रस और अहंकार
(ब) परपीड़क कुटिलता और ईर्ष्या का भाव
(स) स्थितप्रज्ञता और अनुपम भावनात्मक संतुलन
(द) पुत्री के भविष्य के प्रति गहरी चिंता और व्याकुलता

Section B: अतिलघु उत्तरीय प्रश्न (1 अंक)

प्रश्न ५. गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' महाकाव्य की रचना मुख्य रूप से किस भाषा में की है?

उत्तर - .....

.....

.....

प्रश्न ६. "बहु धनुहीं तोरीं लरिकाई" यह व्यंग्य वचन परशुराम से किसने कहा था?

उत्तर - .....

.....

.....

egyanarchive

Section C: लघु उत्तरीय प्रश्न (2 अंक)

प्रश्न ७. परशुराम के अनुसार सच्चा 'सेवक' कौन होता है और शत्रुतापूर्ण कार्य करने वाले का क्या परिणाम होता है?

उत्तर - .....

.....

.....

.....

प्रश्न ८. "अरध निमेष कलप सम बीता" पंक्ति के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि सीता जी के लिए आधा क्षण एक युग के समान क्यों हो गया था?

उत्तर - .....

.....

.....

.....

Section D: दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (4 अंक)

प्रश्न ९. "क्रोध को केवल शांति और विवेक से ही जीता जा सकता है।" परशुराम के क्रोध के सम्मुख श्रीराम की 'विनम्रता' और लक्ष्मण के 'तीखे व्यंग्य' की प्रतिक्रियाओं का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए उत्तर दीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

Section E: रचनात्मक/मूल्य आधारित प्रश्न (HOTS - 5 अंक)

प्रश्न १०. राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद में 'मर्यादा और वाणी के संयम' के महत्व को दर्शाया गया है। आज के आधुनिक छात्र जीवन में सोशल मीडिया या कक्षाओं में बढ़ते आपसी विवादों (Cyber-bullying/Agression) को रोकने के लिए 'वाणी के संयम' पर एक ५ सूत्रीय कार्य-योजना तैयार कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

egyanarchive

उत्तरकुंजी (कार्यपत्रिका - 1)

1. **उत्तर:** (ख) घोर संकट के समय भी अपनी सर्वोच्च विनम्रता और मर्यादा बनाए रखना।
2. **उत्तर:** (ख) उपमा और रूपक अलंकार।
3. **उत्तर:** (क) कथन A सही है, परंतु कारण R गलत है (क्योंकि राजा आदर से नहीं बल्कि प्राणों के भय से प्रणाम कर रहे थे)।
4. **उत्तर मिलान:** (1) -> (ब), (2) -> (द), (3) -> (अ), (4) -> (स)।
5. **उत्तर:** तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना **अवधी भाषा** में की है।
6. **उत्तर:** यह व्यंग्य वचन कुमार **लक्ष्मण** ने परशुराम से कहा था।
7. **उत्तर:** परशुराम के अनुसार सेवक वही होता है जो निरंतर सेवा का कार्य करे। जो व्यक्ति शत्रु जैसा आचरण (जैसे शिव-धनुष तोड़ना) करता है, वह केवल लड़ाई (युद्ध) का ही अधिकारी होता है।
8. **उत्तर:** क्योंकि सीता जी परशुराम के प्रचंड और क्रूर स्वभाव से भली-भाँति परिचित थीं। धनुष टूटने के बाद उत्पन्न हुए इस घोर अनपेक्षित संकट काल में श्रीराम की सुरक्षा और अपने विवाह के भविष्य को लेकर वे इतनी व्याकुल थीं कि उनके लिए आधा क्षण भी एक युग (≈ 4 अरब वर्ष) के समान भारी लग रहा था।
9. **उत्तर:** इस प्रसंग में तुलसीदास ने एक ही परिस्थिति के प्रति दो विपरीत मानवीय स्वभाव दिखाए हैं। लक्ष्मण वीर रस से ओतप्रोत हैं; वे परशुराम के अहंकार को चुनौती देने के लिए 'धनुही' जैसे व्यंग्य बाणों का प्रयोग करते हैं, जिससे परशुराम का क्रोध और अधिक भड़क जाता है। इसके विपरीत, श्रीराम का उदात्त चरित्र है। वे न हरषे न बिषाद की मुद्रा में शांत खड़े रहते हैं और स्वयं को 'दास' कहकर मुनि के अहंकार को चोट पहुँचाए बिना उनका क्रोध शांत कर देते हैं। यह सिद्ध करता है कि क्रोध को केवल ठंडे विवेक और विनम्रता से ही जीता जा सकता है, उग्रता से नहीं।
10. **उत्तर (वाणी संयम कार्य-योजना):**
    - **१. 'सोचो और थमो' (Pause and Reflect):** किसी भी उग्र टिप्पणी या संदेश का तुरंत उत्तर देने के बजाय २ मिनट का मौन रखकर विचार करें।
    - **२. अपशब्दों का त्याग:** बातचीत या चैटिंग में 'कठोर वचनों' और अपमानजनक भाषा का प्रयोग पूर्णतः वर्जित हो।
    - **३. समानुभूति (Empathy):** सामने वाले की परिस्थिति और भावनाओं को समझकर आदरपूर्वक अपनी असहमति दर्ज कराना।
    - **४. रचनात्मक मध्यस्थता:** कक्षाओं में जब दो मित्रों के बीच विवाद हो, तो लक्ष्मण की तरह आग भड़काने के बजाय श्रीराम की तरह 'विनय' से बीच-बचाव करना।
    - **५. डिजिटल मर्यादा:** सोशल मीडिया पर किसी का उपहास उड़ाने वाले पोस्ट या मीम्स साझा न करने का सामूहिक संकल्प लेना।

egyanarchive

पाठ - राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद (तुलसीदास)

कार्यपत्रिका - 02

समय: 40 मिनट **पूर्णांक:** 25

Section A: अपठित गद्यांश एवं भाषा-बोध (Comprehension & Grammar)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सटीक उत्तर लिखिए: >

"साहित्य में संवाद केवल दो पात्रों के बीच की बातचीत नहीं होता, बल्कि यह चरित्रों के आंतरिक जीवन, उनके नैतिक मूल्यों और मनोवैज्ञानिक अंतर्द्वंद्व को प्रकट करने का सबसे सशक्त माध्यम है। गोस्वामी तुलसीदास कृत 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' इसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। अवधी भाषा का यह काव्यात्मक सौंदर्य जहाँ एक ओर परशुराम के रौद्र रूप और लक्ष्मण के ओजस्वी प्रत्युत्तरों में नाटकीयता उत्पन्न करता है, वहीं दूसरी ओर श्रीराम का धीर, गंभीर और 'न हरषु न बिषादु' वाला संतुलित रूप हमें जीवन-संग्राम में अडिग रहने की दार्शनिक प्रेरणा देता है। वास्तविक संवाद वही है जो भाषा की मर्यादा को बनाए रखते हुए सत्य को स्थापित करे और समाज में सौहार्द की भावना का ह्रास होने से बचाए।"

प्रश्न १. गद्यांश के अनुसार, 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' की सबसे बड़ी विधागत विशेषता क्या है?

(क) इसमें केवल राजाओं के धन और ऐश्वर्य का काल्पनिक वर्णन है।

(ख) यह अपनी उत्कृष्ट संवाद शैली के माध्यम से नाटकीयता, चरित्र-निर्माण और भावों की विविधता उत्पन्न करता है।

(ग) यह केवल अंग्रेज़ी अखबारों की तरह पालिटिक्स पर बहस करना सिखाता है।

(घ) इसमें केवल तीर्थ यात्रा और कठिन व्रतों का उपदेश दिया गया है।

प्रश्न २. पाठ के व्याकरण के अनुसार, 'भृगुकुलकेतू' और 'तिपुरारि' शब्द किस महान व्यक्तित्व के पर्यायवाची के रूप में आए हैं?

(क) क्रमशः राजा दसरथ और विश्वामित्र

(ख) क्रमशः मुनि परशुराम और भगवान शिव

(ग) क्रमशः श्रीराम और लक्ष्मण

(घ) क्रमशः राजा जनक और सहस्रबाहु

प्रश्न ३. "बिधि अब सँवरी बात बिगारी।" इस पंक्ति में आए 'बिधि' शब्द का खड़ी बोली हिंदी रूप क्या होगा?

(क) कानून या नियम

(ख) विधाता / भाग्यविधाता ईश्वर

(ग) पूजा करने का सही ढंग

(घ) अत्यधिक गहरा भय

Section B: अतिलघु उत्तरीय प्रश्न (1 अंक)

प्रश्न ४. "सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु" पंक्ति में परशुराम का परम शत्रु किसे बताया गया है जिसने शिव-धनुष तोड़ा था?

उत्तर - .....

.....

.....

प्रश्न ५. 'अरि करनी' शब्द का शब्दकोश के अनुसार प्रामाणिक और व्यावहारिक अर्थ लिखिए।

उत्तर - .....

.....

.....

egyanarchive

Section C: लघु उत्तरीय प्रश्न (2 अंक)

प्रश्न ६. परशुराम के अत्यंत कठोर वचनों को सुनकर भी राजा जनक के 'मौन रहने' को आप उनका डर मानेंगे या विवेकपूर्ण निर्णय? तार्किक उत्तर दीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

प्रश्न ७. उमा की कड़क आवाज़ और लक्ष्मण के व्यंग्यपूर्ण वचनों में सामाजिक अन्याय के विरुद्ध क्या समानता दिखाई देती है?

उत्तर - .....

.....

.....

.....

Section D: दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (4 अंक)

प्रश्न ८. "धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार"। लक्ष्मण द्वारा शिव-धनुष को बचपन की मामूली धनुही कहना और परशुराम द्वारा उसे ब्रह्मांड विख्यात त्रिपुरारी का धनुष बताना—दोनों के इस वैचारिक टकराव के मूल मनोवैज्ञानिक कारणों को सविस्तार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

Section E: रचनात्मक/मूल्य आधारित प्रश्न (5 अंक)

प्रश्न ९. स्वयंवर की इस ऐतिहासिक सभा में श्रीराम का 'भावनात्मक संतुलन' (Emotional Intelligence) उन्हें एक आदर्श राजा और कुशल शासक सिद्ध करता है। उनके इस 'न हरषु न बिषादु' के दिव्य गुण से सीख लेते हुए, परीक्षाओं के परिणाम (Result) के समय छात्रों में बढ़ते मानसिक तनाव और अवसाद को रोकने के लिए एक मूल्य-आधारित संक्षिप्त कार्य-योजना प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

egyanarchive

उत्तरकुंजी (कार्यपत्रिका - 2)

1. **उत्तर:** (ख) यह अपनी उत्कृष्ट संवाद शैली के माध्यम से नाटकीयता, चरित्र-निर्माण और भावों की विविधता उत्पन्न करता है।
2. **उत्तर:** (ख) क्रमशः मुनि परशुराम (भृगुकुल के दीपक) और भगवान शिव (त्रिपुर के शत्रु)।
3. **उत्तर:** (ख) विधाता / भाग्यविधाता ईश्वर।
4. **उत्तर:** परशुराम के अनुसार, शिव-धनुष तोड़ने वाला **सहस्रबाहु** के समान उनका परम शत्रु है।
5. **उत्तर:** 'अरि करनी' का अर्थ है—**शत्रुतापूर्ण कार्य** या ऐसा कुकर्म जिससे लड़ाई (युद्ध) अनिवार्य हो जाए।
6. **उत्तर:** राजा जनक का मौन पूरी तरह **विवेकपूर्ण निर्णय** था। परशुराम उस समय क्रोध से अंधे होकर पूरे राज्य को उलटने की धमकी दे रहे थे। ऐसे अविवेकी क्रोध के सामने प्रतिवाद करना विनाश को आमंत्रण देना होता, इसलिए जनक ने मौन रहकर सभा की सुरक्षा सुनिश्चित की।
7. **उत्तर:** दोनों ही पात्र (उमा और लक्ष्मण) समाज में व्याप्त थोपे गए अनुचित घमंड और रूढ़ियों का कड़ा प्रतिरोध करते हैं[cite: 6, 9]। उमा जहाँ विवाह के बाज़ार में लड़कियों के वस्तुकरण पर करारा प्रहार करती है[cite: 6], वहीं लक्ष्मण परशुराम के क्षत्रिय-मर्दन के एकाधिकारवादी अहंकार को अपने तर्कों से चुनौती देते हैं। दोनों का उद्देश्य आत्मसम्मान की रक्षा करना है[cite: 6, 9]।
8. **उत्तर:** इसके पीछे दोनों पात्रों का भिन्न जीवन-अनुभव और दृष्टिकोण है। लक्ष्मण एक वीर क्षत्रिय कुमार हैं; उन्होंने बचपन में खेल-खेल में कई धनुहियाँ तोड़ी थीं, इसलिए उनके लिए धनुष का टूटना एक सहज प्राकृतिक घटना थी। इसके विपरीत, परशुराम के लिए वह धनुष केवल लकड़ी का ढाँचा नहीं, बल्कि उनके परम आराध्य भगवान शिव की असीम सत्ता और गौरव का प्रतीक था। लक्ष्मण व्यावहारिक धरातल पर बात कर रहे थे, जबकि परशुराम धार्मिक और वैचारिक आस्था के शिखर पर आहत महसूस कर रहे थे।
9. **उत्तर (तनाव प्रबंधन कार्य-योजना):** * **१. समत्व अभ्यास:** छात्रों को सिखाना कि सफलता (हर्ष) और असफलता (विषाद) दोनों ही जीवन के अस्थाई पड़ाव हैं, अंतिम परिणाम नहीं।
    - **२. काउंसलिंग सत्र:** परीक्षा परिणाम से पूर्व विद्यालयों में अनौपचारिक 'धीर सत्र' आयोजित करना जहाँ छात्र अपने भय को साझा कर सकें।
    - **३. अभिभावक संवेदीकरण:** माता-पिता को प्रेरित करना कि वे बच्चों पर अंकों का अनुचित दबाव न बनाएं, बल्कि उनकी 'सच्ची अनुभूति' और प्रयास का सम्मान करें[cite: 4, 9]।
    - **४. योग और प्राणायाम:** मानसिक चंचलता और अवसाद को रोकने के लिए दैनिक दिनचर्या में १० मिनट का ध्यान अनिवार्य करना।
    - **५. पीयर-सपोर्ट (सच्ची यारी):** हीरा-मोती (पाठ १) की तरह संकट के समय सहपाठियों का मज़ाक उड़ाने के बजाय उन्हें मानसिक संबल देना।

egyanarchive